तित्थयर

जैन भवन

वर्ष : २४ अंक : ६
सितम्बर २०००

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २४ | अंक - ६, सितम्बर | २०००

|| जैन भवन ||

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - Editor : **Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख		लेखक	पृ. सं
१.	वर्तमान प्रजातन्त्र के जनक महावीर	-	लता बोथरा	२४३
२.	सराक जाति का संक्षिप्त इतिहास	-	श्री अमरेन्द्र कुमार सराक	२४७
३.	मलयासुन्दरी चरित्र	-		२५५
४.	जैन धर्म की संक्षिप्त रूपरेखा	-	श्री नरेन्द्र सिंहपतसिंहजी दुगड़	२६४

आवरण चित्र—**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :

Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

वर्तमान प्रजातन्त्र के जनक महावीर

अमेरिकी राष्ट्रपति श्री क्लिन्टन ने अपनी भारत यात्रा के समय भारतीय संसद को सम्बोधित करते हुये कहा था :——

India has been teaching a very importent lesson to us, that is demoracy "भारत ने हमें प्रजातन्त्र का महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाया है।" भारतीय प्रजातन्त्र के सन्दर्भ में अमेरिका के राष्ट्रपति का यह मन्तव्य बहुत ही महत्वपूर्ण कहा जा सकता है क्यों कि भारत में प्रजातन्त्र की नींव का इतिहास प्राग्वैदिक युग से हमें प्राप्त होता है। प्रजातन्त्र के मूल्य हमारी प्राचीन परम्परा की देन है जो हर युग में किसी ना किसी रूप में उपस्थित रहे है।

प्रजातन्त्र का अर्थ है सत्ता जो जनता के लिये जनता द्वारा और जनता की हो। वर्तमान में विश्व में प्रजातन्त्रात्मक प्रणाली को श्रेष्ठतम प्रणाली माना जाता है। सभी बड़े व उन्नतिशील देशों में प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था चल रही है। आज से हजारों वर्षों पूर्व गणराज्यों की परम्परा थी जिसका वर्णन हमें प्राचीन साहित्य में मिलता हैं। इस व्यवस्था की उत्पत्ति तथा उसकी मूल पृष्ठभूमि का प्रारम्भ कब और कैसे हुआ यह जानना आवश्यक है। वह कौन सा दर्शन था, वह कौन की विचार धारा थी जिसने प्रजातन्त्र का विकास किया यह जानने के लिये मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ राज्य की उत्पत्ति की सभी मान्यताओं तथा प्रचलित दर्शनों के विस्तृत अवलोकन की आवश्यकता है।

प्रजातन्त्र की आत्मा जनता में निहित रहती है। इस प्रणाली में जनता की भागीदारी ही नही वरन् जनता की इच्छानुसार राज्य संचालन होता है। जैन मान्यतानुसार संसार आदि और अनन्त है तथा जिस प्रकार दिन के बाद रात और रात के बाद दिन आता है उसी प्रकाए उत्थान के बाद पतन और पतन के बाद उत्थान का क्रम आदि काल से अनवरत रूप से चलता आ रहा है। प्रारम्भ में कुलकर व्यवस्था से पूर्व कोई

सामाजिक संगठन नहीं था। युगलिया जन्म होते थे जो कल्पवृक्षों द्वारा प्राप्त फल फूलों आदि से अपना जीवन यापन करते थे। उस समय मनुष्य स्वभाव से शांत, एवं स्वतन्त्र जीवन जीता था। उनका जीवन शोक रहित था। ना चोरी थी, ना मारकाट, न हत्याएँ। द्वितीय आरे में भी यही स्थिति थी लेकिन तीसरे आरे के अन्तिम चरण में स्थिति में परिवर्तन होने लगा, जनसंख्या बढ़ने लगी। अब कल्पवृक्षों से मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होने से संघर्ष होने लगा अतः एक नयी व्यवस्था का विकास हुआ। लोग कुल के रूप में संगठित होकर रहने लगे तथा कुलों का मुखिया कुलकर कहलाने लगा। कुलकर का कार्य कुलों की रक्षा करना तथा नियम बनाना था।

स्थानांग, समवायांग और भगवती सूत्र में ७ कुलकरों का वर्णन मिलता है। १. विमलवाहन, २. चक्षुष्मान, ३. यशोमान्, ४. अभिचन्द्र, ५. प्रसेनजित, ६. मरूदेव, ७, और नाभि। जिनसेन के महापुराण में १४ कुलकरों का उल्लेख है। सुमति, प्रतिश्रुति, सीमंधर, क्षेमंकर, क्षेमंधर, विमलवाहन, चक्षुष्मान्, यशस्वी, अभिचन्द्र, चंद्राय, प्रसेनजित, मरूदेव और नाभि।जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में १५ कुलकरों का वर्णन है। वैदिक साहित्य में कुलकरों के स्थान पर मनु बताये हैं। मनु स्मृति में ७ मनुओं का वर्णन है। पुराण, भागवत, विष्णुपुराण आदि में १४ मनुओं का विवरण मिलता है। इन कुलकरों के समय ३ प्रकार की दण्डनीति प्रचलित थी। हक्कार, मक्कार, और धिक्कार। जब कोई व्यक्ति मर्यादा का उल्लंघन करता तब **हा!** तुने क्या किया। यही अपराधी के लिये दण्ड था तथा इसी को कठोर दण्ड माना जाता था। कालान्तर में लोग **'हा'** करने से नहीं मानने लगे और अपराध करते ही रहे तब **'मा'** यानि मत करो कहकर अपराधी को दण्ड दिया जाता था। जब मानव **'हा'** और **'मा'** को भी नहीं मानने लगे तब धिक्कार नीति प्रचलित हुई जो १४वें कुलकर तक चलती रही। नाभि के समय धिक्कार नीति का भी उल्लंघन होने लगा तथा तब लोग ऋषभ के पास पहुँचे जो नाभि के पुत्र थे और उनसे इस समस्या के निदान की प्रार्थना की। तब ऋषभ देव ने कहा कि प्रजा में मर्यादा का

पालन करने के लिये दण्ड व्यवस्था होती है जिसका संचालन राजा करता है तथा समय-समय पर दण्डनीति में सुधार भी वही कर सकता है। लोगों ने ऋषभदेव को कहा आप ही हमारे राजा बन जाइये इस पर ऋषभदेव ने कहा नाभि कुलकर के पास जाकर उनसे राजा मांगों। तत्पश्चात् लोग नाभि के पास गये। नाभि ने उनकी बात सुनकर कहा कि ऋषभ को राजपद देकर राजा बना लो। नाभि की आज्ञा लेकर प्रजाजन पद्म सरोवर से कमल के पत्तों में जल ले कर आये तथा इन्द्र द्वारा ऋषभदेव का राज्याभिषेक होने पर उनके पैरों पर पानी डाला जिससे उनके अलंकार विभूषित वस्त्र नष्ट ना हो जायें। इस प्रकार ऋषभदेव उस समय के प्रथम राजा घोषित हुये। उन्होंने पूर्व से चली आ रही कुलकर व्यवस्था का अंत कर नूतन राज्य व्यवस्था का निर्माण किया।

वैदिक साहित्य में भी ऋषभदेव का विस्तृत परिचय हमें मिलता है। विष्णु पुराण के अनुसार बह्मा जी ने अपने से उत्पन्न अपने ही स्वरूप तुल्यं को प्रथम मनु बनाया फिर स्वयंभू मनु को प्रियव्रत से आग्नीघ्र आदि १० पुत्र उत्पन्न हुए। आग्नीघ्र से नाभि और नाभि से ऋषभ हुये। श्रीमद्भागवत में ऋषभद्रेव को विष्णु का अवतार माना गया है।

ऋषभदेव ने राजा बनने के बाद राज्य की व्यवस्था के लिये आरक्षक दल की स्थापना की तथा राजकीय व्यवस्था में परामर्श के लिये मंत्रिमंडल बनाया जिसके अधिकारी **भोग** कहलाते थे। उन्होंने सेना तथा सेनापतियों की व्यवस्था की। उन्होंने ४ प्रकार की दण्ड व्यवस्था स्थापित की (१) परिभाषण, (२) मण्डली बंध, (३) चारकबन्ध (बंदीगृह में बंद) (४) छविच्छेद (अपराधी के हाथ पैर नाक-कान आदि का छेदन) उन्होंने मानव जीवन को असि, मसि, कृषि, शिल्प, कर्म आदि सिखाया। अपनी पुत्री बाह्मी को दाहिने हाथ से १८ लिपियों का ज्ञान कराया तथा सुन्दरी को बाँये हाथ से अंक विद्या सिखायी। अपने पुत्रों भरत आदि को ७२ कलाओं तथा पुत्री के माध्यम से स्त्रियों को ६४ कलाएं सिखलायी। उन्होंने कर्म के आधार पर क्षत्रिय वैश्य, और शूद्र तीन वर्णों की स्थापना

की। बाह्मण वर्ण की स्थापना ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत द्वारा की गयी थी।

राज्य की उत्पत्ति सम्बन्धी मान्यताओं के विषय में ऋग्वेद में उल्लेख बहुत कम मिलते हैं। लेकिन अथर्ववेद में अनेक स्थानों पर राज्य विषयकर सूत्र है। अर्थववेद में लिखा है कि प्रारम्भ में पृथ्वी बिना राजा के थी। महाभारत में भी हमें ऐसा ही उल्लेख मिलता है कि पहले ना राज्य था, ना राजा और ना दण्ड व्यवस्था। स्वर्णयुग की स्थिति थी लेकिन जैसे जैसे समाज बढ़ता गया वैसे वैसे राज्य और राजा की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। लोग सदाचार से भ्रष्ट होने लगे। **मत्स्य न्याय** की स्थिति होने लगी, **जिसकी लाठी उसकी भैंस का** सिद्धान्त प्रचलित होने लगा। अतः इस व्यवस्था से छुटकारा पाने के लिये लोग बह्मा जी के पास गये और उनसे राजा देने की विनती की। बह्मा ने मनु को राजा बनने को कहा। लेकिन मनु ने इन्कार कर कहा कि राज्य में अनेक पापकर्म करने पड़ते हैं तब मनुष्यों ने कहा कि राज्य में जो पाप करेगा उसी को पाप लगेगा। हम लोग आपको पशु और स्वर्ण का पचासवाँ भाग एवं अनाज का दशमांश देंगे। अपने धर्माचरण का चौथा हिस्सा भी आपको देंगे अतः आप हमारी रक्षा करें। इस समझौते के बाद मनु ने राजा बनना स्वीकार किया। यह अनुबन्ध जनता तथा मनु के बीच में हुआ।

क्रमशः

सराक जाति का संक्षिप्त इतिहास

श्री अमरेन्द्र कुमार सराक

श्रावकों के आने के पश्चात् ही बाहर से दूसरी जाति के लोगों का आना क्रमशः शुरु हुआ था। सराकों के पूर्वज श्रावक जाति में एक खूबी थी कि किसी भी परिस्थिति में वे लोग अपने को ढाल लेने की क्षमता रखते थे। वे धैर्यशाली थे इसलिये उन लोगों के सामने जब भी कोई समस्या पैदा हुई उस समस्या का समाधान करने के लिये कोई न कोई उपाय निकाल लेते थे। मानव जाति सृष्टि के जीवों के अन्दर श्रेष्ठ जीव हैं। इनके अन्दर ज्ञान तथा विचार विवेचना दूसरे जीवों से ज्यादा हैं। धैर्य बांधने पर मनुष्य हर परिस्थिति का सामना कर अपने जीवन धारण के लिये कुछ नयी खोज कर लेता है।

पैतृक निवास त्याग कर इन लोगों ने पार्श्वनाथ पर्वत क्षेत्र में आकर जीवन निर्वाह के लिये व्यवसाय के साथ-साथ कृषि कार्य को अपनाया। भोजन के लिये अनाज की पूर्ति हेतु, धीरे धीरे यहां की पड़ती जमीन को खेती के लायक बनाकर अनाज की पूर्ति करने लगे। धीरे-धीरे सराकों ने कृषि कार्य को व्यवसाय का रूप दिया। एक-एक सराक परिवार काफी जमीन का मालिक बन गया तथा स्थानीय आदिवासियों को खेत में मजदूरी देकर काफी अनाज उपजाने लगा। अनाज उपजाने के साथ साथ ब्याज पर ऋण देने का पुराना व्यवसाय भी जारी था। सृष्टि के प्रारम्भ में भी मनुष्य ने पेट भरने के लिये जिस प्रकार कृषिकार्य सीखा था, रहने के लिये मकान निर्माण तथा पहनने के लिये वस्त्र बनाना सीखा उसी प्रकार छोटानागपुर में आकर सराक जाति के लोगों को नये सिरे से खेती (कृषि) मकान निर्माण तथा वस्त्र वयन सीखना पड़ा था। क्यों कि इस क्षेत्र में उस समय सभ्यता की रोशनी नहीं पहुंची थी। सराक जाति के पूर्वज श्रावकों ने ही सभ्यता के निवास का श्रीगणेश

इस क्षेत्र में किया। भले ही सराक जाति पहले से कुछ सभ्य थी मगर इस क्षेत्र में आने के पश्चात् इन लोगों को भी आदिम युग में लौट जाना पड़ा था। यहां पर अपनी जरूरतों के सामान का अभाव इनलोगों को शुरू शुरू में महसूस हुआ। फिर यह लोग अपनी जरूरतों का सामान अपने आप तैयार करने लगे। यहां के लोग (आदिवासी) भी सराकों की देखा देखी सभी काम सीखने लगे। इस प्रकार से सराक जाति द्वारा एक नयी सभ्यता का विकास यहां पर हुआ।

छोटानागपुर क्षेत्र में आने के कारण सराक जाति द्वारा आदिवासी जनता की भी तरक्की हुई। आदिवासी लोगों ने सराक जाति से गांव में बसना सीखा, कृषि कार्य सीखा, जंगल की जड़ी, बूटी, फल, मूल आदि सराक जाति के माध्यम से बाहर भेज कर पैसा कमाना सीखा। इस प्रकार से सराक तथा आदिवासी दोनों सम्प्रदायों के लोग एक साथ शांति से अपना जीवन निर्वाह करते थे। जब तक बाहर के लोग यहां आकर आदिवासियों को सराक जाति के खिलाफ नहीं भड़काये, तब तक सराक जाति ने यहां पर किसी प्रकार की तकलीफ महसूस नहीं की। सभी के लिये सब दिन समान रूप से नहीं बीतते हैं। उत्थान के बाद पतन अवश्यम्भावी है। जो चढ़ता है वहीं गिरता है। इस क्षेत्र में आकर सराक जाति एक बार सभ्यता की चोटी पर पहुंची थी। फिर उस जाति को इस क्षेत्र में कई बार विपत्तियों का सामना करना पड़ा। मगर यह जाति आज तक अपनी सभ्यता संस्कृति से अलग नहीं हुई। धैर्य के साथ हर विपत्ति का सामना किया।

अपना दिन गुजारने के लिये इस जाति ने कभी कृषि तो कभी व्यवसाय को भी अपनाया। जिस भी पेशे को अपनाया उसी में ये सफल रहे। आज तक इस जाति के किसी भी व्यक्ति ने भीख नहीं मांगी, ना हीं पैसे के लिये कोई नीच काम किया। शुरू से लेकर अंग्रेज शासन काल तक यह जाति खेती एवं व्यवसाय पर ही निर्भर थी। नौकरी इस जाति को पसन्द नहीं थी। आजादी के पश्चात् हिन्दुस्तान की दूसरी जातियों को सरकार की ओर से मदद मिली और उनकी तरक्की होती गयी। मगर इस जाति को मदद मिलना तो दूर रहा, सरकार द्वारा तैयार की गयी

सूची में इस जाति का नाम तक भी नहीं हैं। दूसरी तरफ जमीन का बँटवारा होते होते आजकल एक एक परिवार के पास जितनी जमीन रह गयी है उससे छः महीने का भी भोजन नही प्राप्त होता। इसलिये आज इस जाति के लड़को को नौकरी करने के लिये बाध्य होना पड़ रहा है।

बाधा विपत्तियों के कारण इस जाति को जब-जब स्थान परिवर्तन करना पड़ा तब-तब इस जाति ने अपना नया निवास किसी नदी किनारे ही स्थापित किया था अपनी कृषि तथा पशुपालन में मदद प्राप्ति के लिये। छोटानागपुर में दामोदर, बराकर, कांसाई, सूवर्ण रेखा आदि नदी के किनारे के अवशेष ही इस सत्यता को प्रमाणित करते है। तथा यह भी प्रमाणित करते हैं कि सराक जाति के पूर्वज श्रावक थे। जिन्होंने जैन सिद्धान्तों पर आधारित सभ्यता का विकास इस क्षेत्र में किया। इस प्रकार से यह प्रमाणित हो जाता है कि छोटानागपुर में जब आदिवासी लोग शिकार करते हुए बट्ठ के जैसे घूमते-फिरते थे उसी समय सराक जाति के पूर्वजों का प्रवेश छोटानागपुर के पार्श्वनाथ क्षेत्र में प्रथम हुआ। इन लोगों ने क्रमशः छोटानागपुर के विभिन्न क्षेत्रों में सराक संस्कृति या जैन संस्कृति का प्रसार किया था।

सराकों (जैनों) द्वारा शिखर राज्य की स्थापना

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक हम यह देख रहे हैं कि जितनी भी सभ्यताओं का विकास हुआ उसमें ज्यादातर सभ्यताओं का विकास नदी घाटी में ही हुआ है। वर्तमान काल में बड़े-बड़े शहर कलकारखाने आदि की स्थापना भी नदी किनारे ही हुई है। ईसा से एक हजार वर्ष पंहले छोटानागपुर के अंचल में सराक जाति के पूर्वजों द्वारा भी एक सभ्यता का विकास किया गया था। धातु युग के प्रारम्भ में ही श्रावक कही जाने वाली इस आर्य गोष्ठी की शाखा पार्श्वनाथ भगवान के साथ छोटानागपुर के पार्श्वनाथ पर्वत संलग्न क्षेत्र में आयी। यह लोग लौह, सोना, आदि धातु का व्यवहार करते थे जिसका प्रमांण इस क्षेत्र में पाये जाने वाले प्राचीन अवशेषों से मिलता है। ईसा पूर्व ५०० शताब्दी में इन श्रावकों द्वारा छोटानागपुर के पार्श्वनाथ संलग्न क्षेत्र में जो मन्दिर आदि पार्श्वनाथ भगवान, श्री महावीर स्वामी आदि की स्मृति में बनाये थे

उन मन्दिरों में लोहे का उपयोग करने का प्रमाण पाया जाता है। जैन धर्म के प्रचार के पश्चात् धातु विद्या में इस क्षेत्र ने काफी उनन्ति की थी। जिसका उल्लेख जैन शास्त्र में भी है रूपनारायणपुर (बंगाल) से पानेबेश्वर तक अजय नदी के दोनों किनारों पर मिलने वाला लोहे का कचरा इस बात का साक्षी है। महावीर स्वामी के शिष्य सुधर्मा स्वामी धातु शिल्प के आचार्य थे जिनका जन्म सराक परिवार में हुआ था। ईसा से ३०० वर्ष पूर्व भद्रबाहु स्वामी का जन्म शिखरभूम या राढ़ अंचल के ही किसी स्थान में हुआ था। भद्रबाहु जैन धर्म के बहुत बड़े विद्वान थे एवं इन्होंने ही जैन धर्म के कल्पसूत्र नामक अमूल्य ग्रन्थ की रचना की थी। हिन्दुधर्म के अन्दर जिस प्रकार गीता का स्थान है जैन धर्म के अन्दर उसी प्रकार कल्पसूत्र का स्थान है। भद्रबाहु को लौहाचार्यों में दूसरा स्थान प्राप्त था।

मानव गोष्ठी की कौन सी शाखा ने इस अंचल का नाम शिखर भूम और पांचेत रखा था या इस क्षेत्र का सामाजिक तथा आर्थिक विकास का श्री गणेश किया था इसका कोई तत्कालीन इतिहास हमें लिखित रूप में प्राप्त नहीं हुआ। अंग्रेज शासन काल में पश्चिमी विद्वानों ने यहां पर प्राचीन सभ्यता का निर्दशन देखकर इस सभ्यता की खोज शुरु की थी। कोई देश या जाति या गोष्ठी का अगर लिखित इतिहास नहीं है तथा उनका इतिहास हमें प्राप्त करना है तो वर्तमान से लेकर क्रमशः पीछे की ओर हमें इस इतिहास की खोज में जाना होगा। इसी तरीके को अपनाते हुए अंग्रेज लोगों ने छोटानागपुर की प्राचीन सभ्यता का अनुसन्धान १९वीं सदी के मध्यभाग में शुरु किया। श्रुति, खण्डहरों, दन्तकथाओं से उन्हें मालुम हुआ कि वर्तमान काल में मानभूम, सिंहभूम दुमका आदि बिहार के जिलों में एवं बाकुंड़ा, वर्द्धमान, वीरभूम, आदि बंगाल के जिलों में बसने वाले सराक लोगों के पूर्वजो ने ही १६०० ई० तक सिंहभूम, धलभूम क्षेत्रमें अपना प्रमाण विस्तार किया था तथा इनके पूर्वजों ने सम्भवतः ८०० से १३०० ई० के किसी समय में इस क्षेत्र के शिखर भूम एवं पांचेत से आकर अपना नया उपनिवेश कायम किये थे। उस क्षेत्र से प्राप्त तीर्थंकरों की प्रस्तर मूर्तियों से अनुमान लगाया गया

हैं कि इन सभी मूर्तियों तथा मन्दिरों का निर्माण सराक सम्प्रदाय द्वारा ही किया गया था। इस प्रसंग में एक अंग्रेज अनुसंधान कर्ता ने लिखा है -

This is borne out by the fact that from all along the banks of the Kansai (Kansabati) river numerous stone images of Jain Tirthankars have been found, Which are datable to the 10th 11th or 12th Centuries -------These can be seen at Boram, Charrah, Pakbirrah---------

सराकों का १० वीं शताब्दी के पीछे का इतिहास अनुसन्धान जब हम करते हैं तो हमें पता चलता है कि धलभूम क्षेत्र में आने के पहले इस सराक सम्प्रदाय के लोगों के पूर्वज शिखर भूम तथा पांचेल के क्षेत्र में अपना उपनिवेश कायम कर एक नयी सभ्यता का विकास किये थे। उसके और पीछे जाने पर हमें यह पता चलता है कि सराक सम्प्रदाय के पूर्वज सराक लोग ही छोटानागपुर के क्षेत्र में पार्श्वनाथ पर्वत के तलहटी में बसने वाली पहली आर्य शाखा हैं जो महावीर स्वामी के जन्म के २५० वर्ष पूर्व पार्श्व प्रभु के साथ इस अंचल में आये थे।

श्री पार्श्वनाथ भगवान के निर्वाण प्राप्ति के पश्चात उनके साथ में आये हुये श्रावक लोग तीर्थाधिराज पार्श्वनाथ संलग्न क्षेत्र अर्थात वर्तमान पालगंज से मधुवन के अन्दर ही बस गये थे। आप वर्तमान में मधुवन की स्थिति जैसी देख रहे है आज से ५० वर्ष पूर्व वहां की स्थिति वैसी नहीं थी। चारों तरफ घनघोर जंगल था। रात को शेर का गर्जन सुनकर दिल दहल जाता था। मगर जगह के माहात्म्य के कारण उन जानवरों द्वारा कभी किसी यात्री को खतरा नही हुआ। जब ५० वर्ष पहले यह स्थिति थी तो इसी से आप अन्दाज लगा सकते हैं कि २००० वर्ष पहले वहां की स्थिति क्या होगी। अभी तो जंगल के अन्दर आपको काफी गांव नजर आयेंगे, कृषि लायक जमीन, सिंचाई की व्यवस्था आदि भी नजर आयेगी मगर उस समय मनुष्यों का दर्शन वहां पर नहीं होता था। छोटानागपुर अंचल में सिर्फ आदिवासियों को ही जंगल में शिकार करते हुए कभी कभी देखा जाता था मगर उन लोगों का स्थायी निवास नहीं था। सराक लोगों की जब धीरे-धीरे आबादी बढ़ने लगी तो यह लोग पूर्व की तरफ

अग्रसर होने लगे और पगडन्डी द्वारा वर्तमान तोपचांची होते हुए कतरास के रास्ते पर दामोदर नदी के किनारे पहुंचे। दामोदर नदी के किनारे का अंचल अपने निवास के अनुकूल देखकर वहीं पर बस गये। इनके आगमन के पश्चात् छोटानागपुर के इस क्षेत्र में बिहार, बंगाल की तरफ से कुछ जातियों ने आकर यहां अपना निवास कायम किया। मगर जितनी भी जातियां आयीं उसमें सराकों के पूर्वज ही समाज में अग्रणी भूमिका निभाते थे। आर्य जाति की इस शाखा को कृषि के साथ साथ धातु उत्पादन का भी ज्ञान था। आर्थिक दृष्टि से ये लोग समृद्ध थे जिसके कारण समाज में कमजोर वर्ग को ब्याज पर पैसा देने के कारोबार को दिनोंदिन बढ़ाकर अपनी समृद्धि बढ़ाते गये। बुद्धिमान होने के कारण सराक लोगों ने खेती को भी व्यवसायिक रूप दिया। जहां-जहां की भूमि को समतल देखा वहां की मिट्टी मजदूरों द्वारा कटाकर कृषि लायक खेत बनाये और मजदूरों द्वारा उस पर खेती कराने लगे। वर्तमान कालमें उत्तर बिहार के गांवों में भी यहीं स्थिति देखने को मिलती है। गांव की सभी जमीन जमीदारों की है। बाकी गांव के लोग उन्हीं की जमीन पर मजदूरी कर दिन गुजारते हैं। आज से २००० /२५०० वर्ष पहले सराक लोगों द्वारा भी ऐसी ही समाज व्यवस्था कायम की गयी थी दामोदर तीरवर्ती अंचल में।

यहां पर बसने वाले सराक जैन तीर्थंकरों एवं श्री पार्श्वनाथ भगवान के भक्त थे। उनके प्रति भक्ति रहने के कारण ही इस क्षेत्र को सराक लोगों ने छोड़ा नहीं। श्री पार्श्वनाथ प्रभू के निर्वाण के समय मन्दिर आदि निर्माण करने की प्रथा शायद नहीं थी इसलिये उनके निर्वाण के साथ साथ मन्दिर आदि का निर्माण नहीं किया था। मगर दामोदर के क्षेत्र से पार्श्वनाथ पर्वत दिखाई पड़ता था एवं सवेरे उठकर लोग पहले पार्श्वनाथ पर्वत या शिखरजी का दर्शन करने के पश्चात् ही भोजन ग्रहण करते थे। पार्श्वनाथ पर्वत को लोग समेद शिखर भी कहते थे। कोई कोई और भी संक्षेप में शिखर जी कहते थे। सराको के पूर्वज श्रावक लोग जब आकर इस क्षेत्र में पहले निवास करना शुरु किये तब लोग शिखरजी की स्मृति में दामोदर तीरवर्ती के इस अंचल को या भूमि को शिखर भूमि या

शिखर नाम रखे। फिर जब इसका क्षेत्र विस्तृत होने लगा यानी आबादी बढ़ने के कारण लोग क्रमशः बढ़ते-बढ़ते पांचेत पर्वत तक पहुंच गये तब पूर्व तरफ पांचेत संलग्न क्षेत्र का पांचेत एवं पश्चिमांचल के क्षेत्र का शिखर या शिखर राज्य नाम रखा गया। काशीपुर राजघराने के कागजातों में भी इन राज्यों के नाम का उल्लेख है। काशीपुर राज -घराने के पूर्वज दामोदर प्रसाद ने इन राज्यों पर कब्जा कर पांचेत को राजधानी बनाया और शिखर राज्य के नाम से दामोदर प्रसाद शिखर नाम धारण किया।

सराक जाति ने यहां के भूमिज तथा बाउरी और कुर्मी जाति के लोगों की सहमति से शिखर जी के नाम से शिखर राज्य का गठनकर प्रजातान्त्रिक शासन कायम किया था। सारा शिखर राज्य एवं पांचेत में पंचायत शासन व्यवस्था कायम थी। इस तरह शिखर राज्य ७००ईसवी तक अपना वैभव बढ़ाता गया। इस राज्य को दामोदर प्रसाद द्वारा अधिकार में करने के पश्चात् ही सम्भवतः शिखर राज्य शिखर भूम राज्य में परिणत हुआ। शिखर राज्य की स्थापना सम्भवतः ईसा के जन्म के ३०० वर्ष पूर्व हुई थी। छोटानागपुर का शिखर राज्य ही पहला राज्य था जिसकी स्थापना आर्य जाति की ही संतान सराक जाति के पूर्वज श्रावकों द्वारा की गई थी।

ऐतिहासिक कामं की शुरुआत में इस राज्य का पत्ता चला है। इस शिखर राज्य का गठन न तो कोई राजा और ना ही कोई राजवंश द्वारा हुआ। मगर यहां पर एक राज्य होने का पता अवश्य ही चलता है। मानभूम जिले की दामोदर नदी का दक्षिणी तीरवर्ती अंचल के पुरातात्विक निदर्शन यह इशारा करते है कि इस शिखर राज्य में जैन धर्म का प्रभाव था अर्थात् यह निश्चित रूप से एक जैन राज्य था। इस राज्य के ध्वंस के पश्चात् तैलकम्प नाम का भी एक राज्य का गठन हुआ जिसकी राजधानी थी तैलकम या तेलकुपी।

बराकर या अजय नदी के किनारे जो सब अवशेष देखने को मिलते हैं उससे यह नही प्रतीत होता कि शिखर राज्य तथा पांचेत की समकालीन सभ्यता यह है। हो सकता है कि पार्श्वप्रभु के साथ आयेहुए श्रावकों अर्थात् सराकों के पूर्वजों के बदले वहां की सभ्यता का विकास

महावीर स्वामी के अनुयायी श्रावकों द्वारा हुआ था। शिखर भूम तथा पांचेत क्षेत्र में सराक लोगों ने श्री पार्श्वप्रभु के निर्वाण के करीब १ या ढ़ेड़ सौ वर्ष के पश्चात ही अपना निवास कायम कर इस क्षेत्र का नाम शिखर राज्य रखा था। इस क्षेत्र में इस जाति का निवास करीब १३ या १४ सौ वर्ष तक रहा होगा। यानि तब तक यहां का वातावरण शान्त रहा होगा। ये जाति शान्ति प्रिय थी, अहिंसा ही इस जाति का मुख्य सिद्धान्त था इसलिये सम्भवतः ज़ब तक पड़ोस के लोगों का इस जाति के प्रति बर्ताव अच्छा रहा तब तक इस जाति ने इस क्षेत्र के विकास में अपना हाथ बंटाया। पांचेत तथा शिखरभूम की स्थापना के पूर्व सराक लोगों के पहले आदिवासियों की एक शाखा भूमिजों का इस क्षेत्र में आना जाना था। सराकों के इस क्षेत्र में बसने के पश्चात् ये लोग भी स्थायी रूप से सराकों के साथ बस गये और सराकों के घर में मजदूरी द्वारा पेट भरने लगे। इसके पश्चात् बंगाल के क्षेत्र वर्द्धमान से बाहरी लोगों का आगमन इस क्षेत्र में हुआ था। यह सराक जाति उस समय पार्श्वनाथ पर्वत के पूर्वांचल में १०० मील के अर्धवृत्ताकार के अन्दर ही बसी थी।

क्रमशः

मलयासुन्दरी चरित्र

पुर्वानुवृत्ति

सिद्ध ज्योतिषी

कानों में अमृत के समान उस सिद्धज्योतिषी के वचन सुनकर उस भीड़ में से कई लोग उसके सन्मुख दौड़े और उसे और भी जल्दी आने के लिये हाथों का इशारा करने लगे। तमाम लोगों की नजर उस आगंतुक ज्योतिषी की तरफ ही लगी हुई थी। उसके नजदीक आते ही उत्सुकता के साथ कई आदमी बोल पड़े, हे महानुभाव! क्या राजकुमारी कहीं जीवित है?

सिद्ध - हां हां कुमारी जीवित हैं और वह सुख में हैं। यह सुन हर्षित हो महाराजा वीरधवल और रानी चंपकमाला आतुरता से बोले - क्या यह सच है कि हमारी पुत्री मलया जीवित है?

सिद्ध - महाराज? राजकुमारी कुएँ में पड़ने से मरी नहीं, वह अभी जीवित है। मैं आपको सब कुछ बतलाऊंगा, आप पहले पानी से इस चिता को ठंडी करा दें। राजा की आज्ञा न होने पर भी कई राज पुरुषों ने चिता को ठंडी कर डाला। ज्योतिषी बोला - महाराज! मैं जो कहूंगा उसमें आप पूर्ण विश्वास रक्खें। मैंने अष्टांग निमित शास्त्र का खूब अभ्यास किया है। अतः मैं अपने अचूक निमित्त ज्ञान से ठीक कह रहा हूं कि आप धैर्य धारण करें व्याकुलता को छोड़कर स्वस्थ हो जायें, मलयासुन्दरी जीवित है और वह आप को अवश्य मिलेगी।

सिद्ध ज्योतिषी के अमृतमय वचन सुनकर राजा बोला-निमित्तज्ञ महाशय! क्या मेरा इतना पुण्य बाकी है कि यमराज के उदर समान उस अन्धकूप में फेंक दी हुई अपनी निर्दोष पुत्री को फिर से मैं इन आंखों से देख सकूं? मैंने कल रात को ही उसे कुप में तलाश कराया, परन्तु वहां पर उसका पद चिन्ह तक भी मालूम न हुआ, इस लिये मालूम होता है कि उसे अवश्य ही किसी हिंसक प्राणी ने खा लिया होगा! हाय! संतान

घातक पापी को मरण की शरण से आश्वासन देकर क्यों रोकते हो?

सिद्ध ज्योतिषी-राजन्! आज जेठ महीने की कृष्ण द्वादशी है। आज से तीसरे दिन अर्थात् चतुर्दशी को जब सब देशों के अनेक राजकुमार आकर स्वयंवर मंडप में विराजमान हुए होंगे; उस समय हजारों लोगों के देखते हुये दुपहर के बाद अनेक प्रकार के वस्त्रा लंकारों से विभूषित राजकुमारी का सब को दर्शन होगा। राजन्! आप उत्साह पूर्वक स्वयंवर मंडप तैयार करावें। देश देशान्तर से आने वाले राजकुमारों को कुमारी के मर जाने की आशंका से मत रोकिये। यदि आप को मेरे कथन पर विश्वास न आता हो तो ज्ञान दृष्टि से देखकर, अपने वचनों की प्रतीति दिलाने के लिये आपकी मर्जी हो तो मैं कुछ प्रमाण भी बतला सकता हूं।

राजा की सम्मति होने से सिद्ध ज्योतिषी कुछ देर ध्यान मग्न रह कर बोला - महाराज! राजकुमारी के हाथ का नामांकित मुद्रारत्न कल ही आपके हाथ में आना चाहिये। चतुर्दशी के दिन प्रातःकाल में नगर के पूर्व दरवाजे के पास राजकुमारों की परीक्षा के लिए लगभग छह हाथ प्रमाण लंबा और अनेक प्रकार के रंग बिरंगों से चित्रित एक स्तंभ कहीं से आप की गोत्रदेवी ला के रक्खेंगी। वह स्तंभ आपको स्वयंवर मंडप में स्थापित करना होगा; उसके पास बज्जसार नामक धनुष जो तुम्हारे घर में मौजूद है बाण सहित पूजन कर रखना होगा। उस धनुष पर बाण चढ़ा कर जो मनुष्य उस स्तंभ को भेदन करेगा वही राजकुमारी का पाणि ग्रहण करेगा। उस स्तंभ की कुछ पूजन विधि भी करनी होगी। हे राजन्! ये तमाम बातें मैंने अपने ज्योतिष ज्ञानबल से जानकर बतलाई हैं। मेरे बतलाये हुए इन प्रमाण या निशानियों में फरक पड़ जाय तो आप अपनी इच्छानुसार कुछ भी कर सकते है।

सिद्ध ज्योतिष ने पूर्वोक्त तमाम बातें ऐसे ढ़ंग से कहीं जिससे राजा और वहां पर रही हुई समस्त जनता के दिल पर उसका बड़ा भारी प्रभाव पड़ा। राजा के हृदय में विश्वास जमने के साथ ही जनता को इतना आनन्द हुआ कि हजारों मनुष्य हर्षित हो मुक्त कंठ से उस सिद्ध ज्योतिषी की प्रशंसा करने लगे और मारे खुशी के लोगों ने अपने शरीर

से कीमती वस्त्राभरण उतार कर उसके सामने ढेर लगा दिया। सब लोग हाथ जोड़ कर उस निमित्तज्ञान शिरोमणि सिद्ध ज्योतिषी से बोले- महानुभाव! आप कृपा कर हमारी यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें। इस समय आपने जो हम पर उपकार किया है, उसके बदले में यदि हम आपको अपना सर्वस्व भी दे डालें तो भी वह कम होगा।

सिद्ध ज्योतिषी बोला सज्जनों! मैं तुम से प्रत्युपकार में एक कौड़ी तक भी न लूंगा। क्योंकि उपकार के बदले में यदि कुछ ले लिया जाय तो वह उपकार कैसा? सिद्ध ज्योतिषी के निस्पृह बचन सुनकर राजा तथा प्रजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्हें उसके वचनों पर विशेष श्रद्धा जम गयी।

राजा बोला सिद्धज्योतिषी! स्तंभ के पूजन की जो कुछ विधि हैं वह सब कुछ आपको ही करनी होगी। जब तक आपके कथनानुसार तमाम बातें न मिलेंगी तब तक आपको मेरे पास ही रहना होगा। सिद्धज्योतिषी ने महाराज बीरधबल की आज्ञा शिरोधार्य की। आशाजनक ये तमाम बातें तो आपने हमें बतलाई, परन्तु ज्ञान दृष्टि से देखकर कृपा कर यह भी बतलाएं कि मेरी पुत्री मलयासुन्दरी का पाणिग्रहण किसके साथ होगा? सिद्धज्योतिषी ने कुछ देर ध्यानावस्था में रहकर कहा सूरपाल का पुत्र महाबल कुमार आपकी पुत्री मलयासुन्दरी का पाणिग्रहण करेगा। वरकन्या का योग्य मिलाप होगा, यह समझकर वहां पर रहे हुए तमाम लोग सिद्धज्योतिषी के अद्‌भुत ज्योतिषज्ञान की प्रशंसा करने लगे।

अब पूर्ण मध्याह्न का समय होने आया था। अतःसुबुद्धि मंत्री ने महाराज बीरधवल से हाथ जोड़ कर प्रार्थना की। महाराज! अब समय बहुत हो गया। आपको राजमहल में पधारना चाहिये। मंत्री के वचन सुन, सिद्धज्योतिषी को साथले, महाराज बीरधवल ने बड़े समारोह के साथ याचकों को दान देते हुये नगर में प्रवेश किया। स्नानादि से निश्चिन्त होकर महाराज ने प्रथम सिद्धज्योतिषी को भोजन करा कर फिर आप भोजन किया। फिर ज्योतिषी के साथ वार्तालाप करते हुए दिन के दोनों पिछले पहर, और सारी रात्रि का समय राजा ने सानन्द व्यतीत किया।

प्रातः काल होते ही हाथी की लीद छानने वाले मनुष्य महाराज के पास आकर हाथ जोड़ निम्न प्रकार से निवेदन करने लगे।

महाराज! हम विशेष कुछ नहीं जानते, हाथी की लीद छानते हुए उसमें से राजकुमारी की यह नामांकित अंगूठी हमें मिली है। यों कहकर उन्होंने वह नामांकित अंगूठी महाराज के हाथ में समर्पण की। राजा कुमारी का वह मुद्रारत्न देख मस्तक हिलाने लगे, और निर्निमेष दृष्टि से उस सिद्धज्योतिषी की ओर देखने लगे। यह देख उत्साह पूर्वक हिम्मत से सिद्धज्योतिषी बोला महाराज! ज्ञानीका बतलाया हुआ भविष्य कभी अन्यथा नहीं होता।

लंबा साँस लेते हुए राजा ने कहा-ज्ञानी महाशय! कुमारी का यह मुद्रारत्न मदोन्तम हाथी के पेट में किस तरह गया होगा? इससे मुझे निराशाजनक शंका पैदा होती है।

सिद्धज्योतिषी बोला-राजन्! हाथी के पेट में मुद्रा रत्न जाने का रहस्य मेरे ज्ञान में स्पष्टतया मालूम नहीं होता, तथापि यह सर्वप्रभाव आपकी कुलदेवी का ही मालूम होता है। यह बात सुनकर राजा को हर्ष के साथ संतोष पैदा हुआ और उसने इस प्रमाण के मिलने पर स्वयंवर मंडप की तमाम तैयारी उत्साह पूर्वक प्रारम्भ करदी। स्वयंवर मंडप तो प्रायः प्रथम ही सम्पूर्ण तैयार हो चुका था, परन्तु बीच में इस दुर्घटना के कारण बिघ्न पड़ने से कुछ थोड़ासा काम शेष रह गया था, अब मुद्रारत्न की प्राप्तिजन्य प्रतीति से पूर्ण होने लगा।

दूसरी तरफ राजा और राजकुमारों के ठहरने के लिए निवासस्थान भी तैयार कराए गए। स्वयंवर मंडप की सभी तैयारियां होती हुई देखकर शहर के बहुत से मनुष्य तरह -२ की बातें करते थे। देखो! राजा की कितनी मूर्खता है? कन्या को मरवा कर स्वयंवर मंडप रचा रहा है। यदि कदाचित् ज्योतिषी के कहे मुजब राजकन्या न मिली तो स्वयंवर में आये हुए राजकुमारों को वह क्या उत्तर देंगे? इससे देश भर में राजा की कितनी लघुता होगी इस बात का उसे कुछ ख्याल है? अगर ऐसा हुआ तो निराशा और अपमान से क्रोधित हो देश देशान्तर से आये हुए वे राजकुमार अवश्य ही कुछ उपद्रव करेंगे। कोई जवाब देता है कि भाई!

इस समय इस विषय में युक्तायुक्त कुछ नहीं कह सकते। समय आने पर सब कुछ देखा जायेगा।

संध्या के समय चारों दिशाओं से अनेक राजा और राजकुमार अपने -२ परिवार सहित चंद्रावती में आने लगे। महाराज वीरधवल ने उन सबको सम्मान पूर्वक अलग-अलग ठहरने के स्थान समर्पण किये। सिद्धज्योतिषी ने राजा से कहा-राजन! मुझे एक मंत्र साधना है, वह आधा तो सिद्ध हो चुका है, परन्तु आधा सिद्ध करना बाकी रहा है। यदि वह शेष रहा हुआ मंत्र आज रात को सिद्ध न किया जाय तो मेरा कार्य सिद्ध होना असंभवित है, इसलिये उस मंत्र को सिद्ध करने के वास्ते आजकी रात मुझे आपकी आज्ञा मिलनी चाहिये। प्रातःकाल होते ही मैं आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊंगा। राजा ने खुश होकर सिद्धज्योतिषी से शेष मंत्र उपयोगी वस्तु या द्रव्य की आवश्यकता हो तो लेते जाने को कहा। राजा के कहने से थोड़ा सा द्रव्य साथ ले सूर्यास्त हुए बाद सिद्ध ज्योतिषी वहां से निकल गया। अब उसके गये बाद आशा निराशा जनक अनेक प्रकार की विचारतरंगों में गोता खाते हुए राजा ने बड़े कष्ट से रात बिताई।

प्रातःकाल शहर के द्वार खुलते ही सिद्धज्योतिषी राजमहल में महाराज वीरधवल से आं मिला। उसे देखकर महाराज वीरधवल के हर्ष का पार न रहा और वह उत्सुकता पूर्वक बोल उठा-महानुभाव! ज्ञानी! तुम्हारा मंत्र सिद्ध हो गया? सिद्धज्योतिषी बोला महाराज! वह कोई साधारण मंत्र नहीं है। बड़ा दुःसाध्य है। उसका बहुतसा अंश तो सिद्ध कर आया हूँ, परन्तु कुछ हिस्सा सिद्ध करना बाकी रहा है। मैं कल संध्या समय आपको प्रातःकाल आने का वचन दे गया था, इसी कारण और आप अधीर न हों इसी लिये मुझे दूसरे काम की परवाह न करके आपकी सेवा में उपस्थित होना पड़ा। अब स्तंभकी अर्चनविधि कर शेष रहे मंत्र की सिद्धि के लिये मुझे वापिस जाना पड़ेगा।

यह सुनकर प्रसन्न हो महाराज बीरधवल मुक्तकंठ से सिंद्धज्योतिषी की प्रशंसा करने लगे और मन ही मन विचारने लगे अहो! बेचारा सिद्धज्योतिषी कैसा परोपकारी है? सचमुच ही ऐसे ज्ञानवान परोपकारी

मनुष्य, वचन को पालन करने में, बड़े तत्पर होते हैं, दूसरे के कार्य के वास्ते निष्कारण इस तरह कष्ट उठानेवाले संसार में विरले ही मनुष्य होते हैं। इस प्रकार जब राजा सिद्धज्योतिषी की मन ही मन प्रशंसा कर रहा था ठीक उसी समय स्तंभ की तलाश में नगर से बाहर भेजे हुए राजपुरुष वहाँ पर आ पहुँचे और राजा से हाथ जोड़कर कहने लगे- महाराज! आप की आज्ञा पाकर स्तंभ की शोध में हम शहर से बाहर गए थे, वहाँ पर तलाश करते हुए दरवाजे से बांई तरफ किले के कोने में विचित्र चित्रों से सजा हुआ एक महान् स्तंभ सीधा खड़ा देखने में आया है।

यह बात सुनते ही सिद्ध पुरुष के ज्ञान की प्रशंसा करता हुआ महाराज बीरधवल सिद्धज्योतिषी और उन राजपुरुषों को साथ ले नगर से बाहर स्तंभ के पास आया। उस विचित्र काष्ठस्तंभ को देखकर सब लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सबके सब आंखे फाड़ कर उस स्तंभ को देखने लगे। कई पुरुष उस स्तंभ को हाथ लगाकर देखने के लिये उत्सुक हुए, परन्तु सिद्धज्योतिषी ने शीघ्र ही आगे आकर वैसा करने से उन्हें रोक दिया, और कहा - बगैर स्नान किये यदि कोई भी मनुष्य इस स्तंभ को हाथ लगायेगा तो राजकुल की कुल देवी कोपायमान हो जायेगी। सिद्धज्योतिषी के कहने से राजा आदि तमाम प्रधान पुरुष पीछे हट गये।

अब स्नान कर पुष्पादि पूजा की सामग्री मंगवा कर सिद्धज्योतिषी ने स्वयं स्तंभकी पूजा प्रारम्भ की। उसने पद्मासन लगाकर ध्यानस्थ के समान बैठ ह्लींकार आदि मंत्र का जाप शुरु किया। कुछ देर बाद गायन और नृत्यादि संगीत प्रारम्भ कराया।

इस प्रकार लगभग डेढ़ प्रहर दिन चढ़ने तक पूजन विधि चलती रही। इसके बाद चार बलवान पुरुषों को स्नान कराकर उनके गले में सुगंधित पुष्पों की माला पहना कर उनसे वह स्तंभ उठवाकर राजा और तमाम मनुष्यों के साथ सिद्धज्योतिषी नगर की तरफ चल पड़े। स्तंभ के आगे नाच और गाना हो रहा था, बन्दीजन जय -२ की ध्वनि कर रहे थे। इस तरह आदर और सम्मान पूर्वक वह स्तंभ स्वयंवर मंडप में लाया

गया। वहाँ पर छह हाथ की लंबी एक शिला मंगाई गई और उसे जमीन में सीधी गड़वादी। सिद्धज्योतिषी के कथनानुसार उस शिला के आधार से स्तंभको बड़ी हिफाजत के साथ सीधा खड़ा किया गया। शिला के पश्चिम की ओर बज्रसार धनुष बाणसहित रक्खा गया। दक्षिण और उत्तर विभाग में स्वयंवर में आये हुए राजा और राजकुमारों के सिंहासन जमाये गये। मंडप में गंधर्वों ने मधुर स्वर से संगीत शुरू किया। नाचनेवाली युवतियों ने ताल मान, के साथ नृत्य प्रारम्भ किया। इस समय धनुष और बाण का पूजन कर सिद्धज्योतिषी ने राजा से स्वयंवर में तमाम राजकुमारों को बुलवा लेने को कहा। राजा के निमंत्रण करने पर तमाम राजकुमारादि स्वयंवर मंडप में आकर, प्रथम से नियुक्त किये हुए अपने अपने सिंहासनों पर बैठ गये। सबके साथ में अपनी अपनी योग्यता के अनुसार परिवार भी था। महाराज वीरधवल को राजकुमारों को यथायोग्य स्थान देने और उनका सम्मान करने में व्यस्त देख सिद्धज्योतिषी एकाएक वहां से गुम हो गया।

जिस वक्त स्वयंवर में आनेवाले राजा व राजकुमारादि अपने अपने सिंहासनों पर परिवार सहित आ बैठे उस वक्त महाराज वीरधवल ने पीछे लौटकर देखा तो सिद्धज्योतिषी वहां पर नजर न आया। मंडप में चारों तरफ नजर घुमाने पर भी जब वह नहीं दिखायी पड़ा तब राजा ने उसे अपने राजपुरुषों से सब जगह तलाश कराया, परन्तु कहीं पर भी उसका पता न लगा। विचार में पड़े हुए राजा को कुछ देर बाद याद आया कि वह अपने अर्धसाधित मंत्र को सिद्ध करने गया होगा।

सिद्धज्योतिषी की कथन की हुई तमाम बातें अभी तक पूरी हुई है; परन्तु उसने जो यह कहा था कि राजकुमारी का पाणिग्रहण पृथ्वीस्थानपुर के नरेश सूरपाल का पुत्र महाबल करेगा। यह बात अभी तक नहीं मिली। किसी कारण इस स्वयंवर महोत्सव में वह यहां पर नहीं आ सका होगा। जब वह बतलाया हुआ कुमार ही यहां पर नहीं आ सका तब फिर वह मेरी कन्या का पाणिग्रहण किस तरह करेगा? राजा इन्ही बिचारों की उलझन में पड़ गये। इधर अपने अपने स्थान पर स्वयंवर में बैठे हुए राजकुमार राजकन्या को वहां पर न देखकर, और किसी के द्वारा यह

सुनकर कि राजकुमारी को राजा ने स्वयं अन्धकूप में डलवा दिया है। वे परस्पर वार्तालाप करने लगे, क्यों भाई! आप किस लिये यहां पधारे हैं? स्वयंवर मंडप में बैठ कर किसलिये मूछों पर ताव दे रहे हैं! जिसकी आशा में आप यहां पधारे हैं उसे तो राजा ने कूप में फेंकवा दिया है। उठो किसका पाणिग्रहण करोगें? क्या यह मंडप रचकर स्वयंवर के बहाने हमें यहां पर बुलवा कर राजा ने हमको मूर्ख तो नहीं बनाया? इत्यादि बातें कहकर वे परस्पर एक दूसरे का मन उत्तेजित करने लगे।

इसी समय महाराज वीरधवल की आज्ञा से एक राजपुरुष ने खड़े होकर निवेदन किया। दुर्धर बाहुबल धारण करने वाले राजा महाराजा और राजकुमारों! आप सावधान होकर सुने, यह जो आप लोगों के सामने बज्रसार नामक धनुष रक्खा है उस पर लीला पूर्वक प्रत्यंच चढ़ाकर , दृढ़ नाराच के एक ही प्रहार से दो हाथ प्रमाण इस स्तंभ के अग्रभाग को भेद कर, जो बलवान राजा या राजकुमार इसके दो हिस्से कर देगा वही कहीं से भी इसी समय प्रगट होनेवाली राजकुमारी मलयासुन्दरी का पाणिग्रहण करेगा, ऐसा हमें हमारी गोत्र देवी ने कहा है। इसलिये हे सामर्थ्यवान् राज कुमारों! आप इस स्तंभ को भेदन करने का प्रयत्न करें। उस राजपुरुष के वचनों से प्रेरित हो महान् उत्साही लाट देश का नरेश खड़ा हुआ, परन्तु धनुष की दुर्घर्षता देख हिम्मत हारकर वापिस अपने आसन पर बैठ गया।

चारण की प्रेरणा से चोल देश के राजकुमार ने अपने आसन से उठकर जमीन पर पैर तो रक्खा परन्तु बज्रसार धनुष की उत्कटता देखकर उसके मुख पर ग्लानि छा गई अतः सबकी हँसी पूर्वक उसे वापिस आपने स्थान पर बैठ जाना पड़ा।

आमर्ष से उठा हुआ गौड़ देश का राजा धनुष को हाथ में उठाते ही उसके वजन से जमीन पर गिर पड़ा, यह देख सभा में बैठे हुए समस्त राजकुमार तालियाँ बजाने लगे। इससे शर्मिन्दा होकर गौड़ देश के नरेश को भी नीचा मुंह कर अपने स्थान पर बैठ जाना पड़ा।

कर्नाटक देश के राजकुमार ने जोश में आकर धनुष को उठा लिया, परन्तु उस पर बाण चढ़ाते ही वह झुक कर जमीन पर गिर गया।

इस प्रकार बहुत से राजा व राजकुमारों का अपमान देख कितने एकतो अपने आसन से उठे तक नहीं। कितने ही लक्ष्य से भ्रष्ट हुए, कई ने स्तंभ पर बाण भी मारा परन्तु स्तंभ के दो भाग न हुए। अनेक राजकुमार अपने उद्देश्य की पूर्ति में असफल हो हारे हुए पहलवान के समान लज्जित होकर चुपचाप अपने स्थान पर जा बैठे। वह दृष्य देखकर महाराज बीरधवल चिन्ता समुद्र में गोते खाने लगा। वह सोच रहा था कि अभी तक कन्या प्रगट नहीं हुई, इससे लोगों में मेरी बड़ी भारी हंसी और अपमान होगा।

राजा बीरधवल को चिन्तातुर देख मंडप में बीणा बजाने वालों में से एक युवक बीणा बजाता हुआ उठा और वह स्तंभ के पास आ खड़ा हुआ। उसने अपनी बीणा वादनकी कला से सारी सभा को मोहित कर दिया, फिर धनुष को हाथ में लेकर वह महाराज बीरधवल से बोला- राजन्! अब आप मेरा भी सामर्थ्य देखें, यों कह उसने शीघ्र ही धनुष पर बाण चढ़ा दिया। उस बीणा वादक के हाथ में धनुष बाण देखकर सारी सभा में कोलाहल मच गया। बहुत से मनुष्य उसे धनुष बाण जमीन पर रख देने के लिए बोलने लगे। परन्तु उसने सबकी बातें सुनी अनसुनी कर धनुष पर एक टंकारव किया और उस स्तंभ के मर्म को जानने के कारण स्तंभ के जोड़ पर जोर से बाण मारा। स्तंभ पर बाण लगते ही उसके दोनों संपुट एक साथ ही खुल गये और उसके बीच से अकस्मात् राजकुमारी प्रकट हो गईं।

क्रमशः

जैन धर्म की संक्षिप्त रूप रेखा

श्री नरेन्द्रपतसिंह दुगड़

जम्बूद्वीप के बाद धातकी खण्ड है। इसके बाद पुष्कर द्वीप फिर वणावर द्वीप, क्षीरोद द्वीप, घृतवर द्वीप, इक्षुवर द्वीप एवं आठवें में नन्दीश्वर द्वीप हैं। मानुषोतर पर्वत पुष्कर द्वीप को दो भागों में विभक्त करता है। मानुषोतर पर्वत के आगे मानव बस्ती नही पायी जाती है। अर्थात अर्द्ध पुष्कर तक ही मानव बस्ती उपलब्ध हैं। जम्बूद्वीप-धातकी खण्ड एवं अर्द्ध पुष्कर क्षेत्र इन अढ़ाई द्वीपों में क्षेत्रों की कुल संख्या ३५ होती है। जिनमें १५ कर्म भूमियां है। ये १५ कर्म भूमियां पांच भारत क्षेत्र में, पाँच ऐरावत क्षेत्र में, एवं पाँच विदेह क्षेत्र में विभक्त है। इन्हीं ५ कर्म भूमियों में तीर्थंकरों का आविर्भाव होता है।

जम्बूद्वीप का एक घातकी खण्ड के दो एवं अर्द्ध पुष्कर क्षेत्र के दो इस प्रकार पाँच महाविदेह क्षेत्र में सर्वदा ही तीर्थंकर विराजते है। जिनकी संख्या कम से कम २० और अधिक से अधिक १६० होती है। इन्हें वीहरमान तीर्थंकर के नाम से जाना जाता है। श्री अजितनाथ भगवान् के काल में ६० तीर्थंकर महाविदेह क्षेत्र में विराजते थे।

वर्तमान में ये २० वीहरमान जिनेश्वरदेव महाविदेह क्षेत्र में बिराज रहे है।

१. श्री सीमंधर स्वामीजी	२. श्री युगन्धर स्वामीजी
३. श्री बाहु स्वामीजी	४. श्री सुबाहु स्वामीजी।
५. श्री सुजात स्वामीजी	६. श्री स्वंप्रभु स्वामीजी।
७. श्री ऋषभानन स्वामीजी	८. श्री अनन्तवीर्य स्वामीजी।
९. श्री सुरप्रभ स्वामीजी	१०. श्री विशाल स्वामीजी।
११. श्री वज्रधर स्वामीजी	१२. श्री चन्द्रानन स्वामीजी।

१३. श्री चन्द्रबाहु स्वामीजी १४. श्री भुजंग स्वामीजी।
१५. श्री ईश्वर स्वामीजी १६. श्री नेमिप्रभ स्वामीजी।
१७. श्री वीरसेन स्वामीजी १८. श्री महाभद्र स्वामीजी।
१९. श्री देवयश स्वामीजी २०. श्री अजीतवीर्य स्वामीजी।

जैन धर्म में मुख्यतया तीन तत्व है - सुदेव, सुगुरु और सुधर्म।

सुदेव दो है - श्री अरिहन्त देव और सिद्ध परमात्मा एवं सुगुरु तीन -श्री आचार्य, उपाध्याय और साधु वर्ग।

सुधर्म तत्व में सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप आते है।

राग द्वेष आदि आत्मिक शत्रु के विजेता जिन या अरिहंत या तीर्थंकर कहे जाते हैं। तीर्थंकर शब्द एक विशेष अर्थ में प्रयुक्त होता है। जो तीर्थों का प्रवर्तन करते हैं उन्हें ही तीर्थंकर कहा जाता है। तीर्थ यानि कि साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका रूपी चतुर्विध संघ। ये १२ गुण, ३४ अतिशय और ३५ गुणयुक्त वाणी के धारक होते हैं। भव्य जीवों के मोक्ष मार्ग के प्रदर्शक और मोक्ष प्राप्ति में सहायक होते हैं।

सिद्धः जो अशरीरी आत्मिक आठ महागुणों के धारक हैं और लोक के अर्द्ध में आलोक को स्पर्श कर अनन्तकाल तक अनन्तज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य धारण कर अक्षय स्थिति में सदा विराजते हैं।

सुगुरु तत्वः

आचार्य : ये ३६ महागुणों के धारक, तीर्थंकर देव के अवर्तमान में संघ के संचालक, संघ के मार्ग दृष्टा अर्थात मोक्ष मार्ग को पालन कराने में सदा तत्पर होते हैं।

उपाध्याय : ये २५ महागुणों के धारक, सूत्र अर्थ के पूर्ण ज्ञाता, पठन - पाठन कराने में सदा तत्पर रहते है।

साधु वर्गः गृह का परित्याग कर भिक्षु जीवन यापन करने वाले को साधु कहते है। ये पंच महाव्रतधारी (१) प्राणातिपात विरमण व्रत,

अहिंसा व्रत, (२) मृषावाद विरमणव्रत (सत्यवादी पंच) (३) अदत्तादान विरमण व्रत (अचौर्य) (४) मैथुनविरमण व्रत (बह्रचर्य) (५) परिग्रह परिमाण व्रत (अपरिग्रह) एवं २७ महागुणों के पालनकर्ता सर्वत्यागी, आत्म कल्याण मोक्ष मार्ग में सदा अप्रमत्त, शुद्ध आचार के सदा पालक, मरणान्तक उपसर्ग सहन करने में सदा तत्पर रहते हैं।

सुधर्म तत्वः

सम्यक् दर्शनः यह ६७ भेदों से दृढ़ किया जाता हैं।

सम्यक् ज्ञानः यह २१ भेदों से जाना जाता है।

सम्यक् चारित्रः यह ७० प्रकार से पालन या आचरित किया जाता है।

सम्यक् तपः यह ५० प्रकार से कर्म रूपी मल को जलाकर भस्म करता है।

अनादिकाल से जीवों को जिन कर्म बन्धनों ने जकड़ कर रखा है उनसे वे कैसे मुक्त हों इस पर ही जैन धर्म ने बल दिया है। अतः यह जानना आवश्यक है कि जीव का असली स्वरूप क्या है? बन्ध क्या हैं? जीव इस वद्धावस्था में किस प्रकार पहुँचता है और इस बद्धावस्था से कैसे मुक्त हो सकता हैं। यह जानकारी हमें जैन धर्म के नवतत्वों से प्राप्त होती हैं। ये नवतत्व हैं।

१. जीव, २. अजीव, ३. आस्त्रव, ४. बन्ध, ५. पुण्य, ६. पाप, ७. संवर, ८. निर्जरा, और ९. मोक्ष.

प्रथम तत्व है जीव। इसे जीवास्तिकाय भी कहते हैं। यह अनादिकाल से संसार में भ्रमण करता आया हैं। इसका अस्तित्व स्वतन्त्र है। चेतना एवं उपयोग इसके प्रमुख लक्षण है। जीव के दो भेद है बद्ध और मुक्त। मुक्त जीव ही सिद्ध कहलाते है। जो जीव अपने समस्त कर्मों को क्षय कर निर्वाण को प्राप्त होते है उन्हें सिद्ध जीव कहते हैं। ये अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र, अक्षय स्थिति, अरूपी निरंजन, अगुरु लघु, अनन्त वीर्य, एवं अनन्त धारक होते हैं। ये संसार के आवागमन से मुक्त होते हैं अर्थात् इनका पुनर्जन्म नही होता।

देव, मानव, नारक एवं तिर्यच बद्ध जीव माने गये हैं। ये संसार में ही चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करते हुए नाना प्रकार के दुःखों को सहते रहते हैं। इन्द्रियों के अनुसार बद्धजीव संसारी पांच प्रकार के होते है - एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय एवं पंचेन्द्रिय। एकेन्द्रिय मात्र स्पर्श इन्द्रिययुक्त जीव को कहते हैं। इन्हें स्थावर भी कहते है। ये भी पांच प्रकार के होते हैं। पृथ्वीकाय, अपकाय, अग्निकाय, वायुकाय एवं वनस्पतिकाय। स्पर्शन्द्रिय एवं रसनेन्द्रिय युक्त जीव द्विन्द्रिय कहलाते हैं। त्रीन्द्रिय में पूर्वोक्ति दो के अतिरिक्त घ्राणेन्द्रिय पायी जाती हैं इसी प्रकार चतुरीन्द्रिय व पंचेन्द्रिय में क्रमशः चक्षुरीन्द्रिय एवं श्रवणेन्द्रिय पाये जाते है। द्विन्द्रिय से पंचेन्द्रिय जीव को त्रस जीव कहते हैं। एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय जीव अमनस्क होते हैं जब कि पंचेन्द्रिय जीव मनस्क होते हैं। जीव भव्य, अभव्य एवं दूरभव्य तीन प्रकार के होते है। जिनमें मोक्ष प्राप्त करने की योग्यता होती है वे भव्य एवं जिनमें मोक्ष प्राप्त करने की योग्यता नहीं होती हैं वे अभव्य जीव कहलाते हैं। जो अनादि अनन्त काल में मोक्ष प्राप्त करने की योग्यता रखते हैं वे दूरभव्यजीव होते है।

दूसरा तत्व है अजीव या जड़। यह जीव तत्व से पूर्णतः विपरीत है। अचेतनता ही इसका प्रमुख लक्षण हैं। अजीव तत्व पांच द्रव्यों में विभक्त है।

१. धर्मास्तिकाय २. अधर्मास्तिकाय ३. आकाशास्तिकाय। ४. पुद्गलास्ति काय एवं ५. काल। प्रथम चार द्रव्य अस्तिकाय है क्योंकि इनकी काया बनती हैं। जबकी काल की कोई काया नही बनती अतः यह अनास्तिकाय हैं। जीव की भाँति ये पांचों भी अनादि हैं, अनन्त है।

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय एक पारिभाषिक अर्थ में प्रयुक्त हुए है। जीव व पुद्गल जब एक स्थान से अन्य स्थान पर गमन करता है तब उसकी गति में जो द्रव्य सहायक बनता हैं वह धर्मास्तिकाय हैं एवं जब जीव स्थित होना चाहता है तो उस स्थिति में जो द्रव्य सहायक होता है वहीं है अधर्मास्तिकाय द्रव्य। वह द्रव्य जो जीव और पुद्गल को रहने का स्थान देता

हैं वह आकाशास्तिकाय। परमाणु या परमाणु समूह को पुद्‌गल कहा जाता है। जिस ज़ड़ पदार्थ से इस सम्पूर्ण विश्व की संरचना हुई है उस पदार्थ के सूक्ष्मतम अविभाज्य अंश को परमाणु कहते हैं। इनकी निम्न विशेषताएं होती है। १. रूप, २. रस, ३. गन्ध, ४. स्पर्श, एवं ५. शब्द।

काल समय को कहते हैं। जीव और पुद्‌गल में जो पर्याय का प्रवाह चल रहा है अर्थात एक अवस्था से दूसरी अवस्था प्राप्त हो रही है उस का कारण काल है। यह जड़ एवं कल्पित पदार्थ है।

तीसरा तत्व है आश्रव। जिन कारणों से शुभ या अशुभ कर्मों का जीव के साथ बन्ध होता है या जिस के द्वारा से वे कर्म आते है, उन्हें आश्रव कहा जाता है। मिथ्यात्व, अविरति, काम, क्रोध, लोभ, मोह, रूप, कणाय, प्रमाद, योग, मन, वचन, काया व्यापार को आश्रव कहा जाता है। संक्षेप में, इन्द्रिय विषयों के प्रति जीव का जो आकर्षण होता है वही आश्रव है।

चौथा तत्व है बन्ध, उपरोक्त कारणों से जब एक विशेष प्रकार का पुद्‌गल आकृष्ट होकर जीव के साथ जुड़ जाता है। उसे ही बन्ध कहते हैं। बन्ध चार प्रकार के होते है। १. प्रकृति बन्ध, २. स्थित बन्ध, ३. अनुभव या रस बन्ध ४. प्रदेश बन्ध। प्रकृति बन्ध, के जीव का अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य एवं अनन्त आनन्दरूपी जो स्वाभाविक गुण हैं वे आवृत हो जाते है। पुनः प्रकृति बन्ध आठ प्रकार के होते है। १. ज्ञानावरणीय, २. दर्शनावरणीय, ३. वेदनीय, ४. मोहनीय, ५. आयु, ६. नाम, ७. गोत्र, ८. अन्त राय। स्थिति बन्ध काल को निरुपति करता हैं अर्थात कौन सा कर्म कितने समय तक जीव के साथ युक्त रहेगा कब कौन कर्म उदय में आएगा। अनुभव या रस बन्ध प्रदान करने की तीव्रता एवं मन्दता शुभ या अशुभ आदि की निरुपति करता है। प्रदेश बन्ध यह निरुपति करता है कि कितने परिमाण में कर्म परमाणु जीव के साथ संलग्न होगा।

लेश्या द्वारा बन्ध को अच्छी तरह से समझा जा सकता है। कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कपोत लेश्या, शुल्क लेश्या, पद्म लेश्या, महापद्म लेश्या। पांचवा व छठा तत्व है पुण्य और पाप। जब कर्मबन्ध शुभ परिणाम देता है तो उसे पुण्य कहा जाता है और जब अशुभ परिणाम देता है तो उसे पाप कहा जाता है। ये दोनों चतुर्थ तत्व बन्ध के ही परिणाम है अतः कुछ आचार्यों ने इन्हें पृथक तत्व नहीं माना हैं।

सातवां तत्व है संवर। संवर तत्व आश्रव के ठीक विपरीत होता है। इसके द्वारा आत्मा में प्रवेशकारी नए कर्मों को रोका जाता है। इच्छा, निरोध, मन, वचन, काया पर संयम, ध्यान, शौच, सत्य व त्याग से संवर साधा जाता है।

आठवां तत्व है निर्जरा। कर्म भोगने से पूर्व संचित कर्मों को ब्राह्य एवं आभ्यन्तर दोनों प्रकार के तप व कृच्छ साधना से क्षय करने का ही नाम है निर्जरा। ऐसे आत्मा से बंधे कर्म यथासमय फल प्रदान कर स्वतः ही निर्जर हो जाते हैं किन्तु उन कर्मों को फल प्रदान करने से पूर्व ही यदि क्षय नहीं किया गया तो उनसे मुक्त हो पाना बहुत कठिन हो जाता है। कारण फल प्रदान काल में भावना के घात प्रतिघात से नया कर्म बन्ध होता रहता है। अतः मुमुक्षुओं के लिये यह आवश्यक है कि कर्म परिपक्व होने से पूर्व ही उनका क्षय कर दें।

नवम तथा अन्तिम तत्व है मोक्ष। संवर व निर्जरा द्वारा समस्त कर्मों का क्षय कर स्वरूप में अवस्थान करने का नाम ही मोक्ष है। मुक्तात्मा अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र, जो आत्मा के आठ स्वाभाविक गुण हैं उन्हें पुनः प्राप्त कर लेती है। तथा अर्द्धगति द्वारा लोक के अग्रभाग में अनन्त काल तक अक्षय आत्मानन्द स्थिति में अशरीरी अगुरु लघु अवस्था में ही अवस्थित रहती है। मुक्ति को प्राप्त करने के लिये मात्र तत्वज्ञान ही यथेष्ठ नहीं हैं। उनके अनुरूप जीवन ज्ञापन करना पड़ता हैं। अतः इन तत्वों के ज्ञान के साथ-साथ सम्यक् ज्ञान्, सम्यक् दर्शन एवं सम्यक् चरित्र की बात भी कही गयी है। इन्हें त्रिरत्न कहा जाता है। इन

तीनों की सम्मिलित आराधना से ही मोक्ष प्राप्त होता हैं।

तत्वार्थ सूत्र के प्रथम श्लोक में इसी का उल्लेख किया गया है।

सम्यक् दर्शन का अर्थ है हर वस्तु तत्व को सही रूप में देखना, मिथ्यात्व से सत्य को पहचानना। सम्यक् ज्ञान दर्शन का ही परिणाम है। हर जीव में किसी न किसी प्रकार का ज्ञान तो रहता हैं किन्तु जब तक सम्यक् दर्शन नहीं होता तब तक सम्यक् ज्ञान नहीं होता। संयम, त्याग, इन्द्रिय, निग्रह और शुद्ध आचरण सम्यक् चारित्र कहलाता है। सम्यक् ज्ञान और सम्यक दर्शन प्राप्त कर चारित्र का पालन ही सम्यक् चारित्र है। पांच महाव्रत दस यतिधर्म, सत्रह प्रकार का संयम एवं श्रावक के बारह व्रत सम्यक् चारित्र के अन्तर्गत है।

चारित्र दो प्रकार का है - सर्व त्याग तथा आंशिक या देश त्याग। साधुओं का त्याग सर्व त्याग और गृहस्थ का त्याग आंशिक या देश त्याग है। सम्यक् चारित्र की धूरी है अंहिसा। जिसका आशय है किसी भी प्राणी को किसी भी प्रकार से आघात नहीं पहुँचाना; कष्ट नहीं देना। यह अहिंसा का नकारात्मक रूप है। स्वीकारात्मक रूप है हर प्राणी का मुक्ति के लिये प्रयास करना और उनके अधिकार को सुरक्षित रखना मदद पहुँचाना। इसीलिये जैन धर्मावलम्बी अहिंसा को परम धर्म कहते हैं, मानते हैं। उपरोक्त नव तत्वों की मन, वचन, काया से आराधना करके जीव मनुष्य भव में कर्म मल को खपा कर शुद्ध-बुद्ध अवस्था पा सकता है, मोक्ष या निर्वाण प्राप्त कर सकता है। इसके लिये आत्म चिन्तन विशेष उपयोगी हैं। अतः यथाशक्ति इसका पालन करना चाहिये। देव, गुरु, सहायक हो सकते है -

जैन धर्म इतना सहज और सरल है कि हर मनुष्य इसका पालन कर सकता है। जैन धर्म कहता है कि जों चाहे सो करो किन्तु प्रमाद रहित अप्रमत्त अवस्था में करो। विवेक की पुकार सुनो एवं सजाग्रत अवस्था में करों।

अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्तवाद, कर्मवाद, यह जैन धर्म की विश्व के प्रति विशेष देन है। जिसका कोई विकल्प नहीं है।

अहिंसा -किसी भी जीव को, मन, वचन, काया या किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं देना। सब जीव समान है। सुख शान्ति से जीना सबको पसन्द है। मरना कोई नहीं चाहता।

अपरिग्रह - अपने प्रयोजन से ज्यादा संचय, या संचय की वृत्ति का त्याग कर देना चाहिये।

अनेकान्तवाद - हर द्रव्य-वस्तु बहुधर्मी है। हर एक दृष्टिकोण से जो सत्य है वह दूसरे दृष्टिकोण से गलत हो सकता है। इसलिये द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव से हर दृष्टि कोण से विचार करने पर सत्य का - सम्यक् स्वरूप जाना जा सकता है। हम धर्म से अपने दृष्टकोण से सत्य है। पर उसी को पूर्ण सत्य मानना गलत है। इस तरह विचार करने से संसार का हर वैमनस्य दूर हो सकता है।

संकलन

अपनी क्षमता को पहचाने

एक सेठ को घोड़ों का शौक था। उसके अस्तबल में दुनियाभर की किस्म (जाति) के घोड़े थे। कुछ अड़ियल किस्म के घोड़े भी थे, जिन्हें सेठ अधिक उपयोग में लाता। उनकी सवारी सेठ के अलावा और कोई कर नहीं सकता था, कारण वे सेठ के काबू में ही थे। अन्यों को तो वे पटक देते थे। अड़ियल घोड़ों से सेठ छक कर काम लेता । वे सेठ के इशारे पर सरपट दौड़ते थे। सेठ चाबुक अवश्य रखता था लेकिन उसका उपयोग अधिक नहीं करता, मात्र इशारे से काम चलाता।

अचानक सेठ की मृत्यु हो गयी। सेठ की मृत्यु उपरान्त अड़ियल घोड़ों के लिये सेठ के उत्तराधिकारियों ने विचार-विमर्श किया कि अब उनका क्या किया जाये? इस घोड़ों का उपयोग सम्भव नहीं व बिना उपयोग ये नुकसान का कारण बनेंगे। एक उत्तराधिकारी ने एक अवसर पाकर उनका उपयोग करने की चेष्टा की तो उसे मुंह की खानी पड़ी। आखिर एक ने कहा कि इन्हें अस्तबल से अलग कर दिया जाये, दूसरा बोला लोग क्या कहेंगे कि सेठ ने तो इन्हें सम्हाला व उत्तराधिकारी निकाल रहे हैं, क्या इसे लोग सेठ का अपमान नहीं कहेंगे? तो पहले वाले ने कहा मैं नहीं समझता कि इसमें सेठ जी का अपमान है व न ही हम उस भावना से ऐसा कर रहे हैं। इसमें तो उल्टा समझदारों के बीच सेठ जी का मान ही बढ़ेगा कि देखो सेठ कैसे अड़ीयल घोड़ों पर काबू रखते थे। हममें वह क्षमता नहीं यह सत्य है व रखकर नुकसान उठायें इससे अच्छा है अलग कर यह स्वीकार करने में शर्म न करें कि हम सक्षम नहीं ऐसे अड़ियल घोड़ों को पालने में। आखिर सर्वसम्मति से उन घोड़ों को अस्तबल से अलग करने का निर्णय लिया गया।

सेठ के उत्तराधिकारियों का निर्णय सही था। झूठी शान व इज्जत के लिए अगर वे उन घोड़ों का भार वहन करते तो उन्हें नुकसान तो होता ही साथ ही उम्रभर सरदर्द पालते व तनावपूर्ण जीवन व्यतीत करते। आज जो लोग झूठी शान शौकत के कारण अपनी क्षमता से भी अधिक बड़े, बाप - दादों के मकान, उनकी पुरानी गाड़ियाँ व नौकर चाकरों की फौज को सम्हाले हुए हैं वे तनावग्रस्त हैं। अपनी क्षमता समझ उस अनुरूप निर्णय लेने वाला सुखी होता है।

ललित कुमार नाहटा

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta-700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,Resi; 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta-700 020
Ph: 247-6874,Resi: 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta -700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box: 16127, Cal-17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph: (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (R) 218-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram: Sudera

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H.M.T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Calcutta - 700 007
Phone: 239 7607

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Ph: 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Ph: 236-3028, 237-4039

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Ph: (O) 244-1309, (R) 475-7458

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Ph: Shop -227-1857 (R) 238-0026

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph: 282-4649, Resi: 247-2670

MANI DHARITAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P. V. C. Insulated Wires and Cables.
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph:(O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile: 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178,25778,25779
Fax: 05414-25378 (U. P.) 0151-61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING
MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Ph: 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Ph: 2477450/5264

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Ph: Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile: 98 3102 8566
Resi: 355-9641/7196

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi: 464-2783

APRAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
Email : Suravee @cal2. vsnl. net in
sona @ cal3. vsnl. net in

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta - 700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta - 69
Ph: 248-1533,248-0046

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Ph: 476-1533

MOTILAL BENGANI
CHARITABLETRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Ph: 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M. D. DND, M. R. C. O. G. (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Ph: 474-8008

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta - 700068
Ph: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1, M. G. Road, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950
(Fact). 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Ph: 2353902/2759
Fax: 033-2353902

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-5146/6941, Mobile: 9830032021
Fax: 91 (33)2420588

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph: 238-7281, 230-1739

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Ph: (O) 348 8576/0669/1242
Resi: 225 5514, 237 8208, 229 1783

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI
CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Ph: 239 6205/9727

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-4730/6256/9867, Direct: 248-6477/6169
Resi: 478-0765/458-3397, Mobile: 98300-30618
Fax: 248-6169

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Ph: 2352076, 2355701

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013
Ph: 244-4436

R. K, KOTHARI
N. I. Corporation
Photographic, Heavy & Fine Chemicals
44c, Indian Mirror Street, Calcutta-700 013
Phone: 245-5763/64/65
D: 245-5766, Fax: 91-33-2446148

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

A. K. CHHAJER
Chhajer & Company
Chartered Accountants
230 A Masjid Moth
South Extension Part-II
New Delhi-110049

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला

१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़

कलकत्ता - ७०० ०७१

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीसी पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी

कलकत्ता

28 water supply schemes

315,000 metres of pipelines

110,000 kilowatts of puming stations

180,000 million litres of treated water

13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in places where Columbus would have feared to tread)

Subhash
Projects and
Marketing
Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITHNATURE

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Calcutta 700016 Ph:(033)245 7562. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi 110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011)684 6003. Regional Office:8/2 Lisoor Road, Bangalore 560 042, Ph: (080)559 5508-15, Fax: (080) 559 5580.

Laying pipelines across one of the nation s driest regions, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreshwar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of paradip

Creating .the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

BOTHRA SHIPPING SERVICES

2, CLIVE GHAT STREET,
(N. C. DUTTA SARANI)
2ND FLOOR, ROOM NO. 10,
CALCUTTA - 700 001
Fax No. 220-6400
Phone: 220-7162
Email : sccbss @ cal2. vsnl. net in

Steamer Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

शास्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone: 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 6346441/6446442
Fax: 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।
Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta, 700 017
Telegram: 'Hindogen' Calcutta
Phone: (033) 242-8399/8330/5443

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
Iron Ore and Manganese Ore Mines
In Orissa

S.G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayaputi, Phase-1, New Delhi-110064
Phone: 5144496,5131086,5132203
Fax: 91-011-5131184
E-mail: Laxman. jariwala @ gems. vsnl. net. in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।"

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin-742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No. : 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English:

1.	Bhagavati-sutra-Taxt edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3-6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7-8)		150.00
	Vol -4 (satakas 9-11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Calcutta; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunaya.}	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Lalwani and S.R. Benerjee - Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00

Hindi

6.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumar Begani	Price Rs.	40.00
7.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti ki Kavita. translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
8.	Ganesh Lalwani - Nilanjana translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
9.	Ganesh Lalwani - Candana-Murti translated by Shrimati Rajkumari Begani.	Price: Rs.	50.00
10.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price: Rs.	60.00
11.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Rat,	Price: Rs.	45.00
12.	Ganesh Lalwani Pancadasi.	Price: Rs.	100.00
13.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price: Rs.	30.00

Bengali:

14.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price: Rs.	40.00
15.	Ganesh Lalwani-Sraman Samskrti Kavita.	Price:Rs.	20.00
16.	Puran Chand Shyamsukha- Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price.Rs.	15.00
17.	Satya Ranjan Bandyopadhyay- Prasnottare Jaina-dharma	Price:Rs.	20.00

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है
एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर
काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45
Vol. XXIV No. 6 TITTHAYARA September 2000
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225